



Daksh



Rekha Yadav

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119082701

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
08/09/1998 :	जन्म तिथि	: 31/07/1998
मंगलवार :	दिन	: शुक्रवार
घंटे 13:35:00 :	जन्म समय	: 17:40:00 घंटे
घटी 18:49:03 :	जन्म समय(घटी)	: 29:52:44 घटी
India :	देश	: India
Gurgaon :	स्थान	: Rewari
28:27:00 उत्तर :	अक्षांश	: 28:11:00 उत्तर
77:01:00 पूर्व :	रेखांश	: 76:37:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:56 :	स्थानिक संस्कार	: -00:23:32 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:03:22 :	सूर्योदय	: 05:44:59
18:35:32 :	सूर्यास्त	: 19:14:23
23:50:11 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:50:07
वृश्चिक :	लग्न	: धनु
मंगल :	लग्न लग्नाधिपति	: गुरु
मीन :	राशि	: तुला
गुरु :	राशि-स्वामी	: शुक्र
रेवती :	नक्षत्र	: स्वाति
बुध :	नक्षत्र स्वामी	: राहु
1 :	चरण	: 3
गण्ड :	योग	: शुभ
वणिज :	करण	: बव
दे-देवांशु :	जन्म नामाक्षर	: रो-रोहिणी
कन्या :	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: सिंह
विप्र :	वर्ण	: शूद्र
जलचर :	वश्य	: मानव
गज :	योनि	: महिष
देव :	गण	: देव
अन्त्य :	नाड़ी	: अन्त्य
सर्प :	वर्ग	: मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी
बुध 15वर्ष 11मा 25दि
शुक्र

03/09/2021

03/09/2041

शुक्र	03/01/2025
सूर्य	03/01/2026
चन्द्र	04/09/2027
मंगल	03/11/2028
राहु	04/11/2031
गुरु	05/07/2034
शनि	03/09/2037
बुध	04/07/2040
केतु	03/09/2041

अंश

28:49:08
21:38:29
17:27:39
17:59:53
06:35:18
00:14:55
08:03:09
09:18:52
07:37:21
07:37:21
15:36:58
05:50:22
11:36:27

राशि

वृश्चि
सिंह
मीन
कर्क
सिंह
मीन
सिंह
मेष
सिंह
कुंभ
मक
मक
वृश्चि

ग्रह

लग्न
सूर्य
चंद्र
मंगल
बुध
गुरु
शुक्र
शनि
राहु
केतु
हर्ष
नेप
प्लूटो

राशि

धनु
कर्क
तुला
मिथु
सिंह
मीन
मिथु
मेष
सिंह
कुंभ
मक
मक
वृश्चि

अंश

20:02:29
14:15:32
14:17:44
22:56:30
04:25:31
03:55:44
20:30:02
09:35:25
07:52:05
07:52:05
17:02:33
06:43:48
11:31:42

विंशोत्तरी

राहु 7वर्ष 8मा 12दि
शनि

13/04/2022

13/04/2041

शनि	16/04/2025
बुध	25/12/2027
केतु	02/02/2029
शुक्र	03/04/2032
सूर्य	16/03/2033
चन्द्र	16/10/2034
मंगल	25/11/2035
राहु	30/09/2038
गुरु	13/04/2041

व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

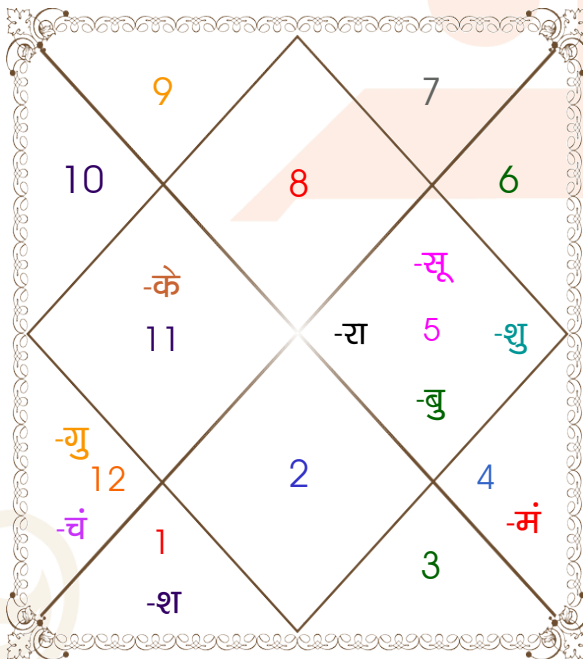
राहु : स्पष्ट

23:50:11

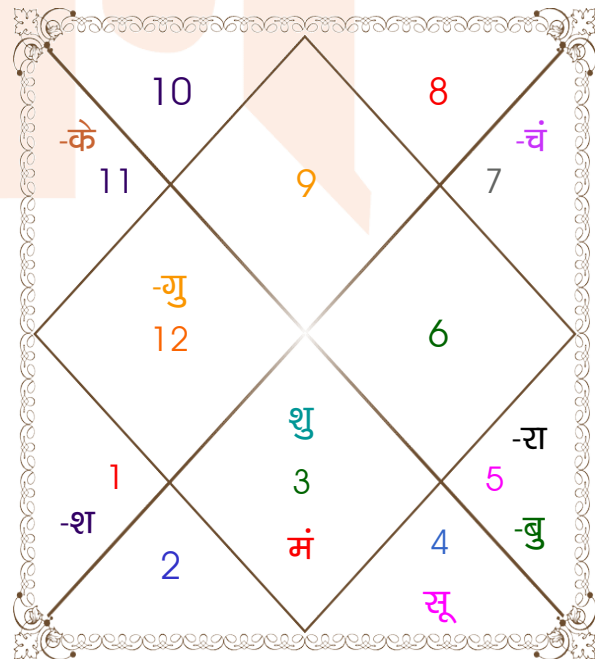
चित्रपक्षीय अयनांश

23:50:07

लग्न-चलित



लग्न-चलित



भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र

पं गोकुल चंद शर्मा

मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा

9312257830

अष्टकूट गुण सारिणी

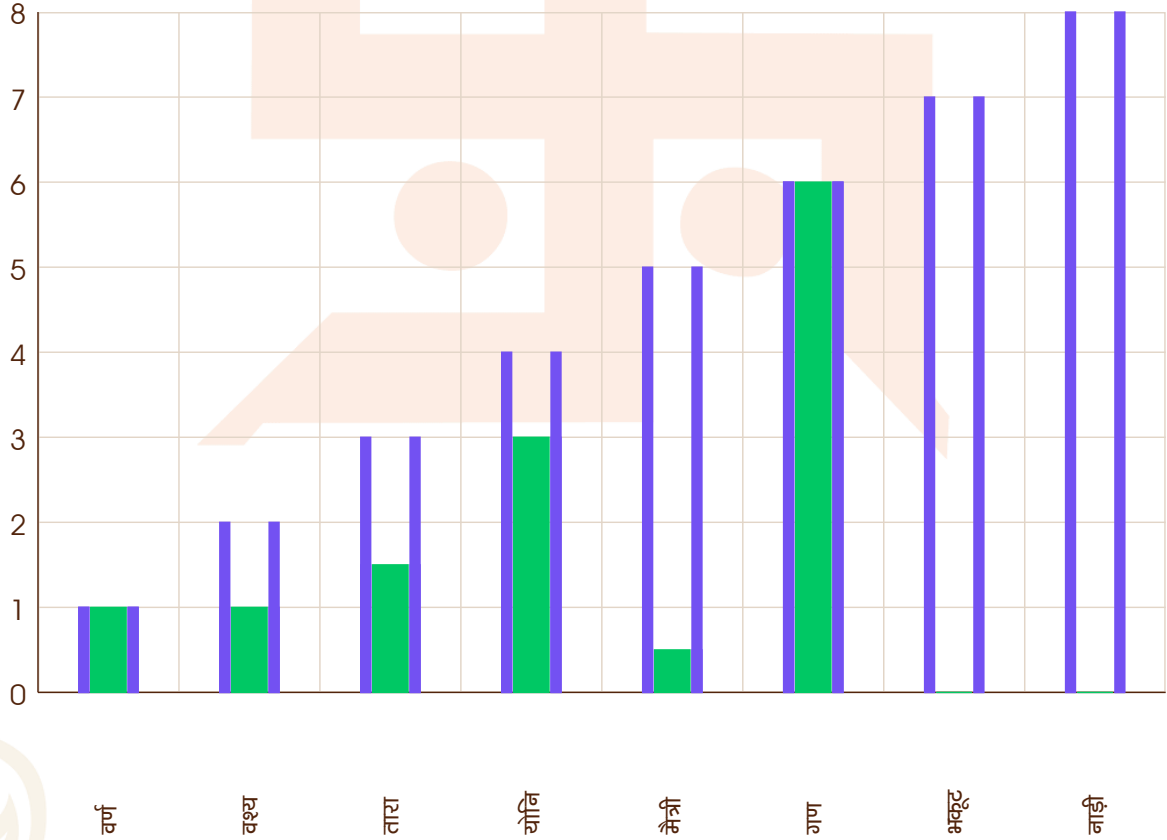
कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	महिष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शुक्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	तुला	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान

कुल :

36

13.00

कुल : 13 / 36



भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र

पं गोकुल चंद शर्मा

मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा

9312257830

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Daksh का नक्षत्र रेवती है।

Daksh का वर्ग सर्प है तथा त्मी लंकंअ का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Daksh और त्मी लंकंअ का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

Daksh मंगलीक नहीं है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

त्मी लंकंअ मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।

त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुण्डली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुण्डली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Daksh की कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Daksh तथा त्मी लंकंअ में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Daksh का वर्ण ब्राह्मण तथा त्मीर् लंकंअ का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। त्मीर् लंकंअ सभी को मान एवं प्रतिष्ठा देती है तथा सेवा करती रहेंगी। साथ ही वह सबकी अपेक्षाओं को पूरा करती रहेंगी तथा किसी के भी साथ तर्क-वितर्क नहीं करेंगी। त्मीर् लंकंअ एक नर्स की भाँति अपने पति एवं बच्चों की सेवा एवं तिमारदारी करती रहेंगी।

वश्य

Daksh का वश्य जलचर है एवं त्मीर् लंकंअ का वश्य द्विपद अर्थात् मनुष्य है। जिसके कारण यह मिलान मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जलचर कभी भी मनुष्य के ऊपर नियंत्रण स्थापित नहीं कर सकता। इसके विपरीत, मनुष्य या तो जलचरों पर नियंत्रण कर लेता है अथवा उसे समाप्त कर देता है अथवा उसका भक्षण कर लेता है अथवा उससे दूर भागता है। अतः यदि इन दोनों बीच विवाह सम्पन्न होता है तो यह अनुकूल नहीं रहेगा। इस स्थिति में त्मीर् लंकंअ अति हावी होती रहेगी तथा हमेशा अपने पति को गुलाम समझती रहेगी तथा चाहेगी कि Daksh उसकी आज्ञा का पालन करे। इससे घर की शांति भंग होगी तथा प्रगति एवं समृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

तारा

Daksh की तारा क्षेम तथा त्मीर् लंकंअ की तारा वध है। त्मीर् लंकंअ की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह Daksh एवं त्मीर् लंकंअ दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल सकता है। त्मीर् लंकंअ अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हो सकती है। अतः संभव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत सकते हैं तथा सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

योनि

Daksh की योनि गज है तथा त्मीर् लंकंअ की योनि महिष है। अर्थात् दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूँजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी

मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Daksh का राशि स्वामी त्मीं लंकंअ के राशि स्वामी से शत्रु का संबंध रखता है। जबकि त्मीं लंकंअ का राशि स्वामी Daksh के राशि स्वामी के साथ सम रहता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए शत्रु किंतु दूसरा उसे सम मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

Daksh का गण देव तथा त्मीं लंकंअ का गण भी देव है। अर्थात् दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश दोनों दयालु, सहृदय, मृदु, सौम्य एवं संवेदनशील स्वभाव के होंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के अति अनुकूल होंगे तथा एक-दूसरे का काफी ख्याल रखने वाले होंगे। ऐसी स्थिति में वैवाहिक संबंध के उपरान्त शांति, सुख, खुशहाली एवं समृद्धि हमेशा कदम चूमती रहेगी।

भकूट

Daksh से त्मीं लंकंअ की राशि अष्टम भाव में स्थित है तथा त्मीं लंकंअ से Daksh की राशि षष्ठम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। इस मिलान को भकूट मिलान में स्वीकृति नहीं प्रदान की जाती है तथा 0 अंक/गुण प्रदान किए जाते हैं। Daksh एवं त्मीं लंकंअ दोनों आक्रामक, गुस्सैल एवं झगड़ालू स्वभाव के होंगे। Daksh शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं, उनके अनेक शत्रु हो सकते हैं तथा अपने व्यवसाय में भी उन्हें जूझना पड़ सकता है। दूसरी ओर त्मीं लंकंअ बिल्कुल लापरवाह, कोई भी कर्तव्य एवं जिम्मेदारी नहीं निभाने वाली, हरदम स्वयं के स्वार्थपूर्ति में ही खोई रहने वाली होंगी। उन्हें किसी भी प्रकार का वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं हो पायेगा तथा उनके पति की मृत्यु की भी संभावना बनी रहेगी।

नाड़ी

Daksh की नाड़ी अन्त्य है तथा त्मीं लंकंअ की नाड़ी भी अन्त्य है। अर्थात् दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात् यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। Daksh एवं त्मीं लंकंअ की एक ही नाड़ी अन्त्य होने के कारण शरीर में श्लेष्मा की अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। जोकि भावी दम्पति के लिए खतरे की सूचक हैं। जिसके

प्रभाववश संतान की मृत्यु भी संभव है। आपको श्वास की तकलीफ, दमा जैसी बीमारियां तथा कमजोर स्वास्थ्य का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संतान मानसिक रोग, सुस्त विकास एवं निम्न बौद्धिक स्तर की शिकार हो सकती हैं।



भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र

पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

मेलापक फलित

स्वभाव

Daksh की जन्म राशि जलतत्व युक्त मीन तथा त्मीर् लंकंअ की राशि वायु तत्व युक्त तुला है। जल एवं वायु तत्व के प्रभाव से इनके मध्य स्वभावगत असमानताएं विद्यमान होंगी जिससे संबंधों में तनाव रहेगा। अतः यह मिलान विशेष अनुकूल नहीं होगा।

Daksh की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा त्मीर् लंकंअ की राशि का स्वामी शुक्र परस्पर सम एवं शत्रु राशियों में स्थित है। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति विशेष अनुकूल नहीं रहेगी इसके प्रभाव से परस्पर संबंधों में कटुता का भाव रहेगा। एक दूसरे के प्रति प्रेम सहानुभूति एवं सहयोग भी अल्प ही होगा जिससे वैवाहिक जीवन में सुख शांति की अल्पता रहेगी। साथ ही सुख दुःख में एक दूसरे को अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगे तथा सदगुणों की उपेक्षा करके कमियों पर विशेष ध्यान देंगे। अतः ऐसी प्रवृत्तियों की इनको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

Daksh और त्मीर् लंकंअ की राशियां परस्पर अष्टम एवं षष्ठ भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। अतः इनके प्रभाव से उपरोक्त प्रभावों में और भी वृद्धि होगी जिससे संबंधों में अविश्वास तथा स्वार्थ का भाव उत्पन्न होगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम तथा सदभावना में न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त एक दूसरे से श्रेष्ठ समझने की भी प्रवृत्ति विद्यमान रहेगी। अतः सोच समझकर आपस में कार्य कलाप करने चाहिए।

Daksh का वश्य जलचर तथा त्मीर् लंकंअ का वश्य मानव है। जलचर एवं मानव में नैसर्गिक विषमता होने के कारण Daksh और त्मीर् लंकंअ की अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी असमानता होगी। जिससे दाम्पत्य संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

Daksh का वर्ण ब्राह्मण तथा त्मीर् लंकंअ का वर्ण शूद्र है। अतः इनकी कार्य क्षमताओं में भी असमानता होगी। त्मीर् लंकंअ की प्रवृत्ति धार्मिक एवं शैक्षणिक कार्यों में रहेगी जबकि त्मीर् लंकंअ की प्रवृत्ति किसी भी कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम पूर्वक करने की होगी। अतः यदा कदा मतभेदों की भी संभावना रहेगी।

धन

Daksh और त्मीर् लंकंअ दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

Daksh और त्मीर् लंकंअ दोनों एक ही नाड़ी अन्त्य में उत्पन्न हुए हैं। अतः इनके ऊपर नाड़ी दोष का प्रभाव रहेगा। इससे इन दोनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होगी। साथ ही Daksh के स्वास्थ्य पर मंगल का भी समय समय पर दुष्प्रभाव होता रहेगा इससे वे रक्त या पित संबंधी परेशानियां प्राप्त करेंगे। वे हृदय संबंधी कष्ट भी प्राप्त करेंगे एवं काम शक्ति में भी न्यूनता आएगी जिससे परस्पर तनाव पूर्ण संबंध रहेंगे। अतः ऐसे मिलान की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए तथापि मंगल के शुभ प्रभावों को प्राप्त करने के लिए Daksh को चाहिए कि नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करें तथा मंगलवार के उपवास रखें।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Daksh और त्मीर् लंकंअ का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Daksh और त्मीर् लंकंअ के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में त्मीर् लंकंअ के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन त्मीर् लंकंअ को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में त्मीर् लंकंअ को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Daksh और त्मीर् लंकंअ सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Daksh और त्मीर् लंकंअ का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

त्मीर् लंकंअ के अपने सास से सामान्यतया अच्छे संबंध रहेंगे तथा सास भी उसके विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। त्मीर् लंकंअ भी अपनी सास को माता के समान व्यवहार एवं सम्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी गम्भीर समस्या का परस्पर सामंजस्य से समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ससुर भी उनकी सेवा तथा आदर के भाव से प्रसन्न रहेंगे तथा त्मीं लंकंअ भी अपनी ओर से उनकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर दूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त सास ससुर का त्मीं लंकंअ को ससुराल में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा वे सच्चे मन से उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

Daksh के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को Daksh अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी Daksh के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण Daksh के प्रति सम्माननीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।